दिल का हाल कहे....

पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर इंजीनियरों ने एक ऐसी कम्प्यूटराइज़्ड प्रणाली का विकास किया है जो अरिद्मिया (हृदय की धड़कनों की लय में गड़बड़ी) के मरीज़ की जांच करके उसके शारीरिक लक्षणों के आधार पर उसकी अकाल मृत्यु की पूर्वसूचना दे सकेगी। हृदय की मॉनिटरिंग करने वाले यंत्र या फिर इंटरनल डेफाइब्रिलेटर के साथ इस प्रणाली का उपयोग किए जाने पर अचानक मृत्यु होने के जोखिम से ग्रस्त लोगों के पहले के खतरों की जानकारी मिल सकेगी। इससे उनकी बीमारी की वर्तमान स्थिति व मृत्यु की आशंकाओं बाबत अधिक विश्वसनीय जानकारी मिल सकेगी। आठ घण्टे पहले मिल जाने वाली इस जानकारी से चिकित्सकों को उपचार और सुरक्षात्मक उपाय हेतु उचित समय मिल सकेगा। भविष्य में अस्पतालों के गहन चिकित्सा कक्ष (इंटेसिव केयर यूनिट) में भी इस प्रणाली के उपयोग की योजना है। घरों में हेल्थ मॉनीटरों के साथ भी इसका उपयोग सम्भावित है। इंजीनियरों का मानना है कि इससे डिफाइब्रिलेटर के अनावश्यक झटके (शॉक) भी नहीं सहने पड़ेंगे।

हृदय रोग चिकित्सकों का मानना है कि डिफाइब्रिलेटर लगाए लोगों में शॉक से एक किस्म का मानसिक दबाव पैदा होता है जिससे रोगी हर वक्त डरा सहमा-सा रहता है। यह कम्प्यूटराइज़्ड प्रणाली अरिद्मिया वाले रोगियों की इस मुश्किल को शायद आसान कर सकेगी।

सामान्यतः हृदय की धड़कनों की गति में एक तारतम्य होता है। अरिद्मिया इस तारतम्यता को गड़बड़ा देता है जो रोगी के जीवन के लिए घातक सिद्ध होता है। अरिद्मिया से होने वाली अकाल मृत्यु का प्रतिशत काफी ज़्यादा है।

अभी तक अरिद्मिया के रोगी की सामान्य हृदय गति के लिए इंटरनल डिफाइब्रिलेटर का उपयोग किया जाता था। डिफाइब्रिलेटर बैटरी चलित एक इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली है जिसे अकाल मृत्यु की सम्भावना वाले रोगी की कॉलर बोन के नीचे लगाया जाता है। यह हृदय गति पर नज़र रखता है और किसी गड़बड़ी की आशंका होने पर इलेक्ट्रिक शॉक भेजकर गति को सामान्य करता है। एक अनुमान के मुताबिक इस समय अमरीका में हर वर्ष लगभग 30,000 लोग अरिद्मिया के कारण मारे जाते हैं; यानी एक मिनट में एक मौत। शोधकर्ताओं के अनुसार उनकी प्रणाली अरिद्मिया सम्बंधी दोषों की पूर्व सूचना देने में 80 से 90 प्रतिशत दक्ष है। निश्चय ही यह प्रणाली हृदय-अस्पतालों के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होगी। *(स्रोत फीचर्स)*